तुमने इस किताब को पढ़ा।
क्या तुम बता सकते हो...

मैं कौन हूँ?

मैं किस राज्य से हूँ?

मेरे विन्यास का क्या नाम है?

मैं आलू हूँ। मुझमें
क्या खास चीज़ है?

मुँह में मेरा काम क्या है?

हम रबाड़ी किस प्रदेश में रहते हैं?

हम किस राज्य
के किसान हैं?

काम करने के लिए
मुझे किस चीज़ की
जरूरत है?

दर्पण के कुछ और खेल

नीचे दी गई आकृति को अगर दर्पण के सामने रखें तो वह कैसी दिखेगी? पहले मन से सोचकर हर डिब्बे के तीसरे खाने में बनाओ। फिर दर्पण रखकर इन आकृतियों को देखो। दर्पण में आकृतियाँ कैसी दिखती हैं। जैसी दर्पण में दिख रही हैं वैसी डिब्बे के दूसरे खाने में बनाओ। पहले डिब्बे के चित्र को सुमित्रा ने तीसरे खाने में मन से बनाया है और दूसरे खाने में दर्पण से देखकर।

दर्पण रखते वक्त याद रखना कि दर्पण की चमकीली सतह नीचे दिए गए चित्रों की तरफ हो।

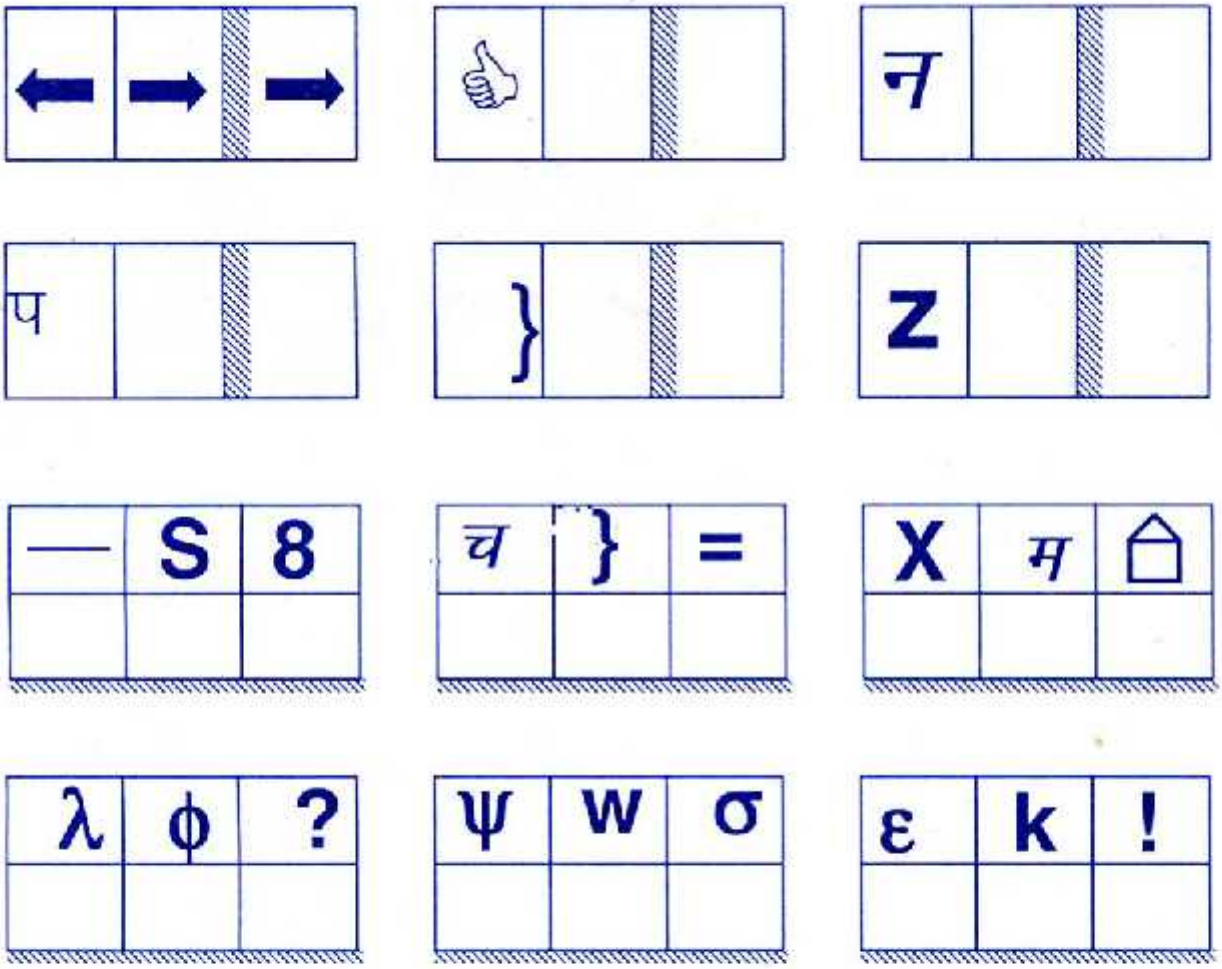

ऊपर दी हुई आकृतियों में कौन–सी आकृतियाँ ऐसी हैं जो दर्पण में वैसी ही दिखती हैं जैसी वास्तव में हैं।

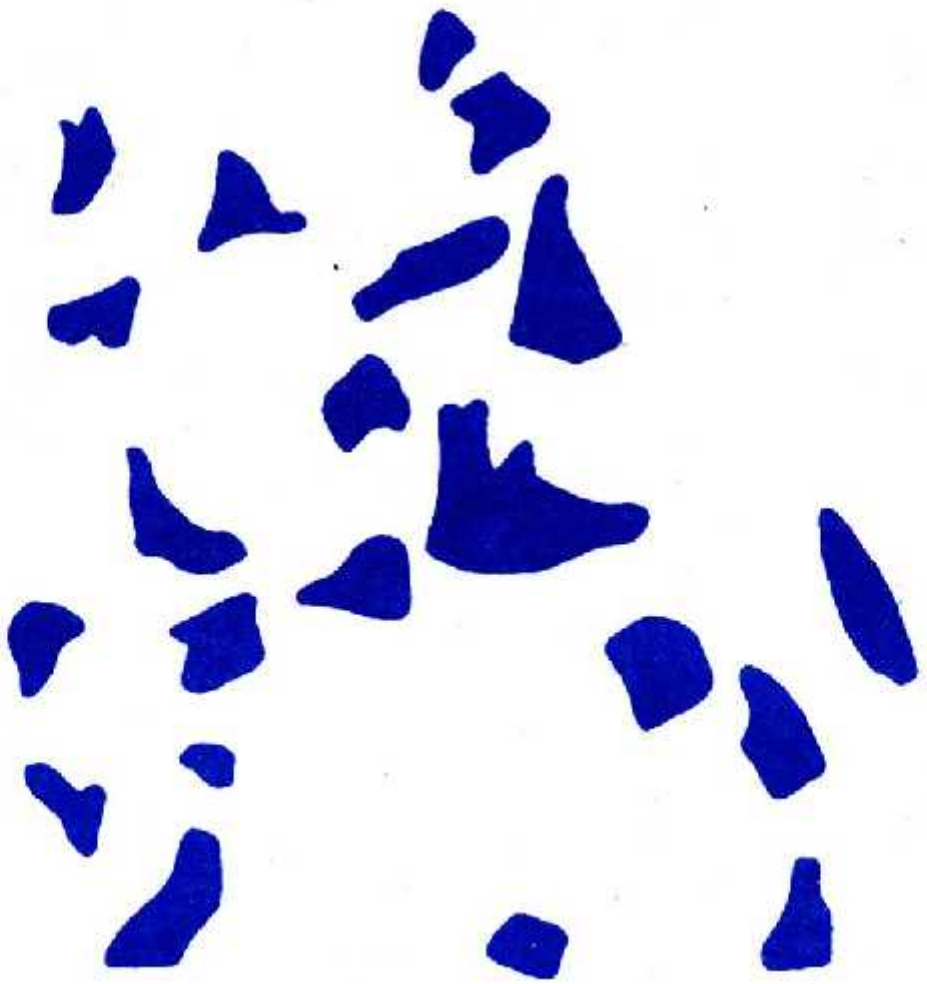

पहली नज़र में देखने पर ये कागज़ के बिखरे टुकड़े लगते हैं। पर इस चित्र को अपने से कुछ दूर रखकर फिर से देखो। क्या नज़र आया?

ISBN: 978-81-89975-06-4

एकलव्य

मूल्य: 70.00

AB534H